आधुनिक हिंदी के विकास में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका

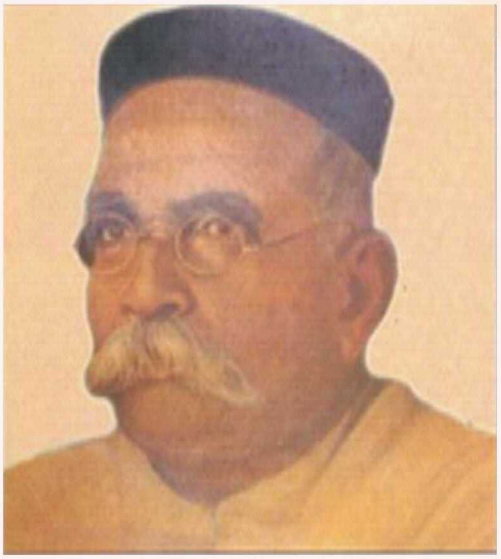

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864–1938) को हिंदी के एक महान साहित्यकार, पत्रकार एवं युगप्रवर्तक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने हिंदी साहित्य में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक चेतना का भाव सृजित कर भाषा की संवृद्धि में अभूतपूर्व योगदान दिया। उनके इस उल्लेखनीय योगदान के कारण ही आधुनिक **हिंदी साहित्य के द्वितीय युग (1900–1920) को द्विवेदी युग** की संज्ञा दी गई है। आचार्य द्विवेदी हिंदी की कालजयी पत्रिका **'सरस्वती'** के सत्रह वर्षों तक संपादक रहे। पत्रिका ने आचार्य जी के संपादन में गुणवत्ता, सामग्री एवं प्रस्तुति आदि ने अपूर्व प्रतिमान स्थापित किए एवं अनेक नए रचनाकारों को खोजकर उन्हें स्थापित करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई जिससे हिंदी के प्रचार–प्रसार का मार्ग प्रशस्त हुआ।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
(1864–1938)

आचार्य द्विवेदी से पूर्ववर्ती हिंदी साहित्यकारों ने भाषा की शुद्धता, वर्तनी, व्याकरण के नियमों, विराम चिह्नों आदि पर विशेष ध्यान नहीं दिया था, द्विवेदी जी ने भाषा के इस अव्यवस्थित स्वरूप को देखकर इन्हें शुद्ध करने का संकल्प लिया। संपादक के रूप में कार्य करते हुए अशुद्धियों की ओर ध्यान आकृष्ट कर शुद्ध लिखने के लिए लेखकों को प्रेरित किया।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भाषा एवं साहित्य के कलात्मक विकास को दिशा देते हुए, हिंदी में अनेक नवीन आयाम जोड़े। इन्होंने ज्ञान के विविध–क्षेत्रों यथा इतिहास, अर्थशास्त्र, विज्ञान, पुरातत्व, चिकित्सा, राजनीति, जीवनी आदि से सामग्री लेकर हिंदी को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा हिंदी की विभिन्न विधाओं को समुन्नत किया।

निबंधकार, आलोचक, अनुवादक और संपादक के रूप में इन्होंने अपना पथ स्वयं निर्मित किया और इस प्रकार भविष्य के रचनाकारों का मार्ग प्रशस्त किया। आचार्य द्विवेदी हिंदी गद्य तथा पद्य के लिए एक भाषा के पक्षकार थे। पाठकों का ज्ञान–वर्धन, विषय–वैविध्यता, सरलता और उपदेशात्मकता इनके साहित्य की विशेषता है। आचार्य द्विवेदी की हिंदी नवजागरण में भी प्रमुख भूमिका रही। उन्होंने विभिन्न विषयों पर अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय स्वाधीनता संग्राम में अमिट योगदान दिया।

द्विवेदी जी की प्रमुख कृतियां :

पद्य (अनुवाद): विनय–विनोद, विहार वाटिका, गंगा लहरी, कुमारसम्भवसार, ऋतुतरंगिणी आदि

गद्य (अनुवाद): अमृत लहरी, शिक्षा, स्वाधीनता, कुमार सम्भव, मेघदूत, रघुवंश, भामिनी विलास आदि

पद्य (मौलिक): देवी स्तुति शतक, नागरी, काव्य मंजूषा, सुमन, द्विवेदी काव्य माला, कविता कलाप आदि

गद्य (मौलिक): वैज्ञानिक कोश, नाट्यशास्त्र, कालिदास की निरंकुशता, आध्यात्मिकी, चरित्र चित्रण, पुरातत्व प्रसंग, विज्ञान वार्ता आदि